एक नज़र मुग़ल हरम पर- स्थिति और स्तर
A look at the Mughal harem - position and level

Ritu Aggarwal

Assistant Professor,
Waheguru College, Abohar, Punjab, India

❖ सारांश:-

हरम शाही महिलाओं के रहने का एक अलग स्थान होता था। प्राचीन काल से ही इसका जिक्र हमें समकालीन स्रोतों से मिलता है। हरम अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है-" छिपा हुआ स्थान"। समय के साथ साथ इसका प्रयोग महिला कक्ष के लिए होने लगा। पर्शियन भाषा में इस स्थान के लिए जनाना, हिंदी में महलशरा तथा संस्कृत में अंतापुरा शब्द का प्रयोग हुआ है।अबुल फजल ने अपनी पुस्तक" आईने अकबरी" में इसके लिए "सबिसथान- ए- इक़बाल "शब्द का प्रयोग किया।

❖ उदेशय:-

1. इस शोध पत्र के द्वारा आपको मुग़ल हरम के बारे में जानकारी प्रपात होगी।
2. इस शोध पत्र के द्वारा आपको हरम के वास्तुकला की जानकारी प्रपात होगी।
3. इस पत्र के माध्यम से मुग़ल हरम में नियम तोड़ने पर किस प्रकार की सजा मिलती थी इस बारे में जानकारी प्रपात होगी।
4. इस शोध पत्र के द्वारा मुग़ल हरम में स्त्रियों की स्थिति और उनके स्तर की जानकारी प्रपात होगी।

❖ मूल शब्द:-

हरम, बादशाह, महल, स्त्री, हिंजड़े, दासी, बेगम

❖ प्रस्तावना:-

हिंदुस्तान में कई सालों तक कई बादशाहो या फिर राजाओं का राज रहा है, लेकिन इस दौरान कई वंशज रहे हैं, जिनकी हुकूमत को आज भी याद किया जाता है- जैसे मुगल साम्राज्य आदि। वैसे तो मुगल साम्राज्य का शासन का दौर काफी लंबा रहा है, जिसके बारे में विस्तार से बात कर पाना थोड़ा मुश्किल है। लेकिन कहां जाता है कि हिंदुस्तान पर मुगलों का शासन लगभग 1526 से 1707 साल तक रहा है, जिसकी स्थापना बाबर ने पानीपत की पहली लड़ाई में इब्राहिम लोदी को हराकर की थी। इसके बाद कई बहादुर बादशाहों ने मुगल साम्राज्य का शासन बढ़ाने का काम किया था जैसे- हुमायु, अकबर, जहांगीर, शाहजहां और औरंगजेब प्रमुख बादशाह है।

कहा जाता है कि इन्होंने अपने शासन के दौरान न सिर्फ समाज का निर्माण किया बल्कि भारत को नया आयाम देने का भी काम किया है। इसलिए कई लोग मुगल शासन और मुगल शासन से जुड़ी चीजों को जानने में रुचि रखते हैं, खासतौर पर मुगल हरम। इसलिए इस शोध पत्र के द्वारा हम आपको मुगल हरम और इससे जुड़े कुछ रोचक तथ्यों के बारे में जानकारी दे रहे हैं।

❖ हरम का अर्थ:-

हरम - अरबी भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ होता है" पवित्र या वर्जित। "मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर के समय भी हरम था, लेकिन उसने हिंदुस्तान पर केवल चार बरस हुकूमत की और इसमें भी ज्यादातर समय लड़ाई के मैदान में बीता। इसलिए वह अपने हरम पर अधिक ध्यान नहीं दे सका। हरम को व्यवस्थित रुप दिया अकबर ने।

मुगलों ने अपने हरम में दुनिया के कई देशों, विभिन्न धर्म और संस्कृति की महिलाओं को ला कर रखा था। मुगल काल में जिस कमरे में खास महिलाएं या फिर बेगम रहा करती थी, उसे हरम कहा जाता था। यानी आसान शब्दों में महल में शाही महिलाओं के लिए रहने की अलग से व्यवस्था या फिर कमरों को हरम के नाम से जाना जाता था। हरम मतलब "एक छुपा हुआ कमरा जहां पुरुषों के आने की इजाजत नहीं थी।"

मुगल हरम का सही रूप अकबर से शुरू होता है और जहांगीर के समय में अपने चरम तक पहुंचता है तथा औरंगजेब के साथ ही अपनी पहचान खो देता है ,क्योंकि इसके बाद मुगल शासन का अंत हो चुका था। मुगल बादशाह कमजोर हो चुके थे। सही रूप से उनके साम्राज्य का आकार सिकुड़ गया था।अब हरम रंग रलियो का केंद्र बन गया था। मुगल काल में अनेक

स्थानों पर हरम थे। मुख्य शाही हरम आगरा, दिल्ली, फतेहपुर सिकरी और लाहौर में थे। जहां पर बादशाह और उसके अधिकारी रहते थे। इसके अलावा अहमदाबाद, बुरहानपुर, दौलताबाद और श्रीनगर में भी हरम स्थापित किए गए थे।

❖ कैसे शुरू हुई हरम बनवाने की परंपरा:-

अबुल फजल की किताब के मुताबिक मुगल साम्राज्य का हर बादशाह अपने महल में महिलाओं के लिए हरम बनवाया करते थे। जिसकी शुरुआत बादशाह अकबर ने की थी इसके बाद जहांगीर के शासन के दौरान हरम बनवाने की परंपरा अपने चरम पर थी, लेकिन औरंगजेब के शासन के दौरान मुगल हरम की परंपरा खत्म हो गई थी थी।

❖ मुगल हरम में महिलाओं की संख्या:-

हरम में महिलाओं की संख्या का समकालीन स्त्रोतों के द्वारा पता चलता है। अबुल फजल लिखता है कि "अकबर के हरम में 5000 महिलाएं थी" परंतु इससे पहले के दो बादशाहो के समय यह संख्या 300 और 400 से अधिक ज्ञात नहीं होती है। अबुल फजल लिखता है- "राजपूत शासक मान सिंह के हरम में भी पंद्रह सौ महिलाएं थी।" फ्रांसिस मांजरेट के अनुसार राजनीतिक संधियों के लिए अस्थाई शादियों के जरिए अकबर की 300 पत्नियां थी, परंतु यह संख्या सही नहीं लगती क्योंकि जैसा अबुल फजल लिखता है कि हर महिलाओं के लिए अलग कक्ष होता था तो उस समय आगरा और फतेहपुर सिकरी में इनका निर्माण, लेकिन इनमें से किसी की निशानी न बचना जबकि अन्य समकालीन भवनों के अवशेष बचे हैं, जिससे इन आंकड़ों पर शक होता है।

हॉकिंस जहांगीर की पत्नियों की संख्या 300 बताता है जबकि कोरियत यह संख्या 1000 बताता है जिनमें नूरमहल परमुख थी। जहांगीर के आधुनिक जीवनी कार बेनी प्रसाद 300 के आंकड़े को भी सही नहीं मानते हैं। हालांकि वह इसमें एक बात जोड़ते हैं कि इनमें शायद सभी रखेलों की संख्या भी शामिल होगी। टोमसरॉय जहांगीर के समय में हरम की महिलाओं व अन्यो की संख्या 3000 बताता है जिसमें बादशाहो के परिवार की महिलाओं के अलावा रखेले तथा हिजड़े और दासिया भी शामिल थी।निकोलो, मनूची दो हजार की संख्या वैधानिक रूप से सही मानते है। हरम में फिर भी उप पत्नियों और रखैलों की संख्या काफी बढ़ी थी लेकिन पहले की तरह सैकड़ों में नहीं थी। औरंगजेब के समय भी हरम में संख्या बहुत कम ही थी।

❖ हरम के अंदर की जीवनशैली:-

हरम के अंदर रहने वाले हर सदस्य को कठोर नियम का पालन करना पड़ता था। सामान्यतः से महिलाओं को बाहर जाने की अनुमति नहीं दी जाती थी ,मगर वह बाहर जाती तब भी पर्दा करना जरूरी था। हरम के अंदर उनको अनेक आराम देने वाली सुविधाएं प्रदान की जाती थी। उनके जीवन में आमोद प्रमोद की कमी नहीं थी। यूरोपियन यात्री बेर्नियर और मनूची ने अपनी रचनाओं में इसका वर्णन किया है-" हरम के अंदर हर सुविधा प्रदान की जाती थी। यह महिलाएं बड़े महंगे कपड़े पहनती थी, महंगे जेवर डालती थी। इनके कक्ष बढ़े आराम दायक होते थे। हरम की महिलाएं शराब पीती थी। इनका खाना शाही रसोई से आता था। गर्मियों में ठंडे पानी का विशेष प्रबंध होता था। अनेक प्रकार के फल उपलब्ध होते थे। शाही कारखानों में इनके लिए सुंदर परिधान, जेवरात ,अन्य प्रयोग की वस्तुएं तथा अनेक प्रकार की साजो समान की वस्तुएं तैयार की जाती थी।"

❖ हरम में महिलाओं का स्तर व स्थिति:-

मुगलकालीन महिलाओं का सारा जीवन शहंशाह के प्रभाव में ही रहता था। हरम की सारी महिलाओं की स्थिति एक जैसी नहीं थी। उनकी स्थिति और स्तर शहंशाह के द्वारा ही निश्चित होता था। सभी महिलाओं के आपसी संबंध मित्र भाव के होते थे। ऐसा नहीं है कि वे आपस में घृणा नहीं करती थी, लेकिन सीधी महसूस नहीं होने देती थी। बादशाह की पत्नियों में सभी के लिए यह सम्मान की बात होती थी कि पहले बेटे को कौन जन्म दे। उसका हरम में सम्मान बढ़ जाता था। सभी को वहां खुश रखा जाता था। चिंता और दुखी बातों के लिए हरम में कोई स्थान नहीं था। हरम में किसी की मृत्यु होने से पहले जो महिला बीमार होती थी, उसे बीमार खाने में भेज दिया जाता था।

अगर किसी महिला की कोख से बच्चा पैदा नहीं होता था, तो वह दूसरी महिला का बच्चा ले सकती थी। माहम बेगम जो बाबर की मुख्य पत्नियों में थी तथा हुमायु की मां थी, ने जब हुमायु के बाद जन्म लेने वाले उसके चार बच्चों की मृत्यु हो गई तो उसने बाबर की दूसरी पत्नी दिलदार बेगम से हिन्दाल और गुलबदन को गोद ले लिया। इसी तरह अकबर की पत्नी ने खुर्रम को गोद लिया, आगे चलकर शुजा को भी जहांगीर की इच्छा पर नूरजहां ने गोद लिया।

❖ मां का स्तर:-

मुगल काल के दौरान हरम की पहली सामान्यतः महिला बादशाह की माँ ही होती थी। केवल नूरजहाँ और मुमताज महल जैसी कुछ महिलाओं को छोड़कर सभी मुगल बादशाहों ने मां के लिए बड़ा सम्मान प्रकट किया। बाबरनामा और हुमांयुनामा में इसके अनेक उदाहरण हैं- जब कई अवसरों पर बादशाह की मां उपस्थित होती थी तो उस दिन को त्यौहार की तरह मनाया जाता था। अबुल फजल ने अकबर के बारे में इस अवसर का वर्णन किया है। वह लिखता है कि जब अकबर की मां लाहौर से आगरा पालकी में आ रही

थी तो अकबर भी उसके साथ था। एक स्थान पर अकबर ने पालकी को अपने कंधों पर उठाया और उसके अमीरों ने भी ऐसा ही किया। जहांगीर ने भी अपनी रचना "तुजुक ए जहांगीरी" में इसी प्रकार के अवसर का वर्णन किया है।

❖ सौतेली मां और धाय (उप माता):-

मुगल हरम में बादशाह की मां के अलावा सौतेली मां व धाय (उप माता)भी रहती थी। अनेक अवसरों पर ऐसा हुआ जब बच्चा अपनी मां से अलग हो जाता था तो यह महिलाएं उसका पालन करती थी। यहां तक कि अगर वह कम उम्र का होता तो अपना दूध भी उसे पिलाती थी। धाय का भी हरम में मुख्य स्थान था। इन्हें "अग्गच्छा" कहा जाता था। अकबर जब अपनी मां हमीदा बानो बेगम से बिछड़ गया था तो अनेक धायों ने उसकी देखभाल की ,इनमें माहम अनगा मुख्य थी। इस महिला ने अकबर के आरंभिक शासन काल में बड़ी प्रभावशाली भूमिका अदा की। मुगल बादशाह भी इन महिलाओं का पूरा सम्मान करते थे। माहम अनगा के लिए अकबर के दिल में पूरा सम्मान था। जीजी अनंगा का भी अकबर पूरा सम्मान करता था।

❖ मुगल प्रशासन में हरम की महिलाओं का योगदान:-

मुगल काल में राजमहल के एक बड़े भाग पर हरम की औरतों का आधिपत्य था। यह महिलाएं मुगल प्रशासन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। मुगल बादशाहों की राजनीति में हरम की महिलाएं हस्तक्षेप करने लगी थी। स्त्रियो के शासन संबंधी हस्तक्षेप पर उलेमाओं तथा अमीरों किसी ने इनका विरोध नहीं किया। हरम की स्त्रियों ने मुगल प्रशासन की राजनीति में जो भूमिका निभाई वह मुगल साम्राज्य के लिए लाभकारी सिद्ध हुई। मुग़ल शासक राजनितिक उदेश्य से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करते थे। अकबर ने अनेक राजपूत राजाओ से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किए जिसके कारण उसके हरम में हिंदू स्त्रियों की संख्या अधिक हो गई। अकबर के हरम में बड़ी संख्या में हिंदू स्त्रियों का प्रवेश हुआ तो धीरे-धीरे उसकी नीतियों में परिवर्तन आने लगा। इसी कारण समस्त मुगल बादशाहों में अकबर ही एकमात्र उद्धार बादशाह रहा। हम कह सकते हैं कि अकबर के विचारों में परिवर्तन का मुख्य कारण शाही हरम की स्त्रियों का प्रभाव था। एक बार इतिहासकार बदायूनी और मुकर्रर खान के बीच विवाद हो गया। इस विवाद को मुकर्रर खान की माता ने दोनों के बीच समझौता करवा कर समाप्त किया।

हरम की मुख्य सदस्य मुगल बादशाहों की माताएं व पत्नियां होती थी। मुगल शासक राजनीतिक नीतियों और महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपनी माताओं से राय लेते थे ,किंतु अकबर के शासन काल में महामंगा ने मुख्य सलाहकार के रूप में कुछ समय के लिए भूमिका अदा की जोकि अकबर की माँ नहीं थी। मुगल शासकों के पास एक से अधिक पत्नियां थी ,जो दूसरे धर्म तथा विभिन्न क्षेत्रीय पृष्ठभूमि से संबंधित थी। अपनी राजनीतिक स्थिति को मजबूत करने के लिए मुगल शासक दूसरे क्षेत्रों की शाही परिवार की महिलाओं से वैवाहिक संबंध स्थापित करते थे।

मुमताज महल और नूरजहां ऐसी दो रानियां थी जो न केवल हरम के भीतर प्रभावशाली थी बल्कि राजनीति में भी इनका महत्वपूर्ण योगदान था। पराजित कुलो की राजकुमारियों तथा छोटे कुलो की रानियों की हरम में स्थिति मुख्य रानियों की तुलना में निमन थी। इनके पास हरम में अपना पद ऊपर उठाने का अवसर होता था, जिसके लिए उन्हें एक पुत्र को जन्म देना पड़ता था। इसके अलावा सम्राट की निकटता और उनका स्नेह उनकी पत्नी की स्थिति तय करता था। सम्राट की पत्नियो के बगल में कनीज ,सरकार, प्रीस्टर के नाम से जाने जाने वाले रखवाले होते थे। मुग़ल महिलाएं उच्च स्तर की राजनीति में भाग लिया करती थी।

मुग़ल साम्राज्य में सिहासन पर उत्तराधिकार के लिए मुग़ल माताए व बहने अपने भाइयों की और बेटो की राजनीति को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। इसका उदाहरण बाबर और हुमायूं के शासनकाल में दिखाई देता है, जब मुगल साम्राज्य को जीवित रखने के लिए वार्ताओं की आवश्यकता थी, तो यह महिलाएं थी जिन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनकी बातचीत आमतौर पर प्रभावी होती थी। अकबर ने बैरम खां से खुद को छुटकारा दिलाने के लिए माहम अनगा से मदद मांगी। माहम अनगा ने अपने बेटे और दामाद के साथ मिलकर बैरम खान को उसकी सत्ता में स्थिति से हटाने में सक्षम रही। इसी तरह नूरजहां भी अपने भाई और पिता की सहायता से शक्तिशाली बन गई। यह दोनों जहांगीर के शासनकाल में उच्च पद पर थे। इसने अपनी बेटी लाडली बेगम की शादी जहांगीर के एक बेटे शहरयार से करके अगली पीढ़ी तक अपना प्रभाव बढ़ाने की कोशिश की। मुगल काल में नूर जहां सबसे शक्तिशाली महिला में से एक थी। जहांगीर के शासनकाल में उसने अपने पति के बराबर पद का आनंद लिया। इस ने राजनीतिक निर्णय लिए। अपने नाम के सिक्के चलाए।

एक अन्य क्षेत्र जहां महिलाएं प्रभावी थी- विद्रोहियों को सम्राट से माफ़ी दिलाने में। अकबर की मां ने दो गलत अधिकारियों की तरफ से हस्तक्षेप किया जिन्हे क्षमा कर दिया गया। नूरजहां ने इसी प्रकार एक मनसबदार के लिए क्षमा प्राप्त की। जहांआरा ने कई व्यक्तियों को वजीफा तथा भत्ते प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नूरजहां ,मुमताज, जहांआरा को शाही आदेश जारी करने का सौभाग्य मिला। इनके मोहर लगे हुए कई दस्तावेज मिले हैं व जहांगीर की मां ने कई याचिकाकर्ताओं को सुना और सम्राट के सामने उनकी शिकायत लाई।

कई शाही बच्चों का जन्म हरम में रहने वाली रखैलों से हुआ था। रखैलों का दर्जा पत्नियों से नीचे था, लेकिन वह राजा के लिए केवल मनोरंजन का सामान नहीं थी। उनकी भी शादी होती थी लेकिन इनके मामलों में शादी की रीति रिवाजों का विवरण नहीं मिलता। शादी तथा मातृत्व द्वारा स्थापित दर्जे से कहीं अधिक महत्व व्यक्तिगत संबंध का था। गुलबदन हुमायूंनामा में कहती है

की जब हुमायूं कन्नौज में शेरशाह के हाथों भारी हार के बाद लोटा तो कुछ दिनों बाद अपनी मां से मिलने गया। उसने वहां कुछ महिलाओं को छोड़कर सभी को चले जाने को कहा।

विदेशी पर्यटको के दिए गए वर्तन्तो से पता चलता है कि हर रखैल को अपना अलग-अलग महल दिया जाता था। इसकी रक्षा शक्तिशाली रक्षक करते थे। इसमें केवल किन्नरों और दासियो को जाने की अनुमति थी। इसका वातावरण भी शाही पत्नियों और बहनों के महलो के जैसा ही होता था। मुगल काल के इतिहास के आरंभ में परिवार के भीतर महिला सदस्यों को काफी आजादी थी। इस संदर्भ में उत्सवों के आयोजनों का उल्लेख अनेक स्थानों पर मिलता है। जिसमें पुरुषों के साथ महिलाएं भाग लेती और उनके साथ शराब पीती तथा मौज मस्ती करती थी। गुलबदन की जीवनीकार रुमर गोड़न कहती है कि राजकुमारी के बचपन के दिनों में महिलाएं बुर्का नहीं पहनती थी, वह घुड़सवारी करती थी, शिकार पर जाती थी तथा तीरंदाजी करती थी। हरम के अंदर जाने के लिए महिलाओं को प्रवेश द्वार पर सूचित करना पड़ता था। स्वीकृति के बाद ही अंदर जा सकती थी।

राजा का ध्यान अपनी और आकर्षित करने के लिए हरम की अनेक महिलाएं प्रतिस्पर्धा करती थी। इसलिए इनके बीच शत्रुता होती थी। हुमायूं की मां मांहम बेगम को अपना पोता देखने की बेसब्री के बारे में गुलबदन एक रोचक कहानी बताती है -" मांहम बेगम ने हुमायूं को मेवा जान से शादी करने की सलाह दी। शाम तक बिना किसी परेशानी के शादी हो गई। 3 दिनों के बाद हुमायूं की बेगा बेगम काबुल से आई और उसने अपने गर्भवती होने की सूचना दी। कुछ समय बाद मेवा जान ने भी अपने बारे में इसी तरह की घोषणा की। बेगा बेगम ने एक बेटी को जन्म दिया जबकि मेवा जान ने झूठ बोला था और जल्द ही इस झूठे दावे की पोल खुल गई।" शासक की नजरों में मां के बाद सबसे महत्वपूर्ण स्थान चाचीयों, पिता की बहनों और मां की बहनों का था। हुमायूं अपने चाचीयों और बहनों के साथ काफी समय बिताता था। गुलबदन लिखती है कि इन जमावड़ों में काफी मौज मस्ती होती थी। जब वह किसी चाचा बहन से मिलने जाता था तो अन्य महिला रिश्तेदार भी इसके साथ होती थी। आगे वह कहती है कि हुमायूं की उपस्थिति में महिलाएं अपने वरिष्ठता के क्रम में बैठती थी।

❖ हरम का प्रशासन:-

शाही मुगल हरम के लिए भी एक प्रशासनिक व्यवस्था थी। जिसमें अनेक कर्मचारी शामिल थे।। यह सभी महिलाएं होती थी। हरम की सुरक्षा पर बहुत ध्यान दिया जाता था, क्योंकि बादशाह हरम में सोने के लिए जाता था। वही खाना खाता था जिसके कारण जहर देने की संभावना बढ़ जाती थी।सभी कार्य एक विभाग की तरह होते थे। तभी की तनख्वाह निश्चित की जाती थी जो हरम में नियुक्त किए गए थे। इनमें सबसे प्रमुख दरोगा था ,जो 1028 से 1610रुपए महीना जब कि साधारण नौकर को दो से ₹5 महीना दिया जाता था। हरम के खर्च का हिसाब खजांची रखता था। अगर का कोई भी नौकर अपनी तनख्वाह से अधिक लेना चाहता था तो उसे थाविलधर से संपर्क करना पड़ता था।

अबुल फजल अकबर के शासन में हरम की सुरक्षा का जो चित्रण करता है, उससे जो तस्वीर उभरती है वह इतनी सख्त दिखती है है कि इसमें परिंदे को भी बिना उचित जांच के पर मारने में में कठिनाई होती थी।वह लिखता है" यधपि हरम में पांच हजार से अधिक महिलाए थी,लकिन अकबर ने प्रत्येक को एक अलग महल दे रखा था। ये महल कई कक्षों में बटे थे और प्रत्येक कक्ष एक पवित्र महिला की देखरेख के अधीन था। हरम के अंदर सबसे विश्सवनीय महिला सुरक्षा कर्मियो की तैनाती होती थी, जब की अंतपुर के बाहर किन्नरों की टुकड़ी तैनात रहती थी।सबसे बाहरी घेरे में विश्वास पात्र राजपूतो का समूह पहरेदारी करता था, जबकि उनके आगे प्रवेश द्वारों के द्वारपाल होते थे। हरम की दीवारों के चारों ओर अमीर और अहदी, एकल सिपाही और अन्य सैनिक टुकड़ी गश्त लगाने के लिए तैनात की जाती थी।हरम के सभी आगुन्तको, बेगमो तथा अमीरो की पत्नियो या अन्य पवित्र महिलाओ को प्रवेश द्वार पर सूचित करना आवश्यक होता था। हरम की किसी महिला जिससे इसकी सूचना दी जाती थी ,के द्वारा अपनी अगवानी करवाने की इच्छा व्यक्त करनी पढ़ती थी और अगवानी करने वाली महिला की स्वीकृति के बाद ही उसे एक निर्धारित समय के लिए अंदर जाने की अनुमति दी जाती थी। ऊंचे दर्जे वाली महिलाओं के विशिष्ट मामलों में यह अवधि पूरे माह की भी हो सकती थी। इन सब के अलावा अकबर खुद भी हरम पर निगरानी रखते थे। दशकों के बाद मनूची भी हरम की सुरक्षा व्यवस्था का यही विवरण प्रस्तुत करता है।

औरंगजेब के समय की पुस्तक "अहकाम - ए- आलम गिरी" में उल्लेख मिलता है कि" महलदार यानी हरम की अधीक्षक नूर- अल- विस्सा ने शहंशाह के तीसरे बेटे राजकुमार मोहम्मद आजम को अहमदाबाद स्तिथ शाहीबाग में प्रवेश से मना कर दिया था क्योंकि राजकुमार ने उसे अपने साथ चलने से रोक दिया था। प्रतिक्रिया में राजकुमार ने उसे अपनी सोहब्बत से बाहर निकाल दिया। शिकायत मिलने पर औरंगजेब ने उस महिला को सही ठहराया और अपने बेटे को सजा दी। "

बेग़ तथा दरोगा की यह जिम्मेदारी होती थी कि वे हरम के अंदर सही व्यवस्था बनाए रखें। औरंगजेब के समय महलदार का पद बहुत प्रभावशाली हो गया था।

❖ हरम की वास्तुकला:-

सोलवी सदी के एक यात्री विलयम फिंच ने महल या महल और राजा के कब्र की स्तिथि का वर्णन, दूसरे दरबार के भीतर महल ....प्रत्येक कोने और.............. इस बीच के बीच ....अधिकांश उनकी महिलाओं के लिए

दो उचित बड़े कक्ष हैं (ताकि प्रत्येक महिला को सहूलियत प्राप्त हो)। अलग -अलग आवासों में उनमे से किसी के घर बिना दरवाजे के , सभी राजा की खुशी के लिए खुले घर रखते है। सभी दरबार के बीच में राजा का कक्ष खड़ा होता है, जहां वह खेल की मुर्गे की तरह सब पर बाग़ दे सकता है।

पर्दा के पालन को ध्यान में रखते हुए हरम परिसर ऊंची दीवारों से घिरा हुआ था और इनमें कुछ बेहतरीन इमारतें शामिल थी। इसमें अनुलंगको की एक श्रखला इस तरह से डिजाइन की गई थी कि वे सयुक्त उत्सव के लिए एक केंद्रीय आगन के साथ हवादार और आरामदायक थी। महिलाओं के लिए फव्वारे, तलाब, बगीचे और बाग होंगे जिनमे से कई अपना पूरा जीवन उस परिसर में बिताएंगे। सभी विभाग आपस में जुड़े हुए थे। हरम में केवल एक सख्त पहरेदार प्रवेश द्वार था। अच्छी तरह हवादार कक्षों और मार्गों की एक जटिल भूमिगत प्रणाली थी, जो अपार्टमेंट में खुलती थी और नजर रखने और हरम को नियंत्रित करने के लिए उपयोग की जाती थी। इसके अलावा ग्रीष्म काल के दौरान उपयोग किए जाने वाले तहखाने या तहखाना थे।

❖ शिक्षा:-

मुगल महिलाएं न केवल धार्मिक ग्रंथों में बल्कि कला, विज्ञानं और युद्ध में बहुत अच्छी शिक्षित थी। मोंसरेटे लिखते है की अकबर को महिलाओं की शिक्षा में बहुत दिलचस्पी थी और उन्होंने राजकुमारियों की शिक्षा पर अच्छी देखभाल और ध्यान दिया। उन्हें पढ़ना लिखना सिखाया था और मेट्रो द्वारा अन्य तरीकों से प्रशिक्षित किया जाता था। हरम के अंदर उनके उपयोग के लिए पुस्तकालय थे और उनमें से कई कुशल लेखक और कवि थे।

❖ चिकित्सकों का दौरा:-

मनूची लिखते हैं कि राजघराने में यह प्रथा है जब महल के भीतर एक चिकित्सक को बुलाया जाता है तो किन्नर को अपने सिर को एक कपड़े से ढक ना होता है। जो उसकी कमर तक लटका होता है। वे फिर उसे रोगी के कमरे में ले जाते है और उसे उसी तरह से बाहर निकाल दिया जाता है। सम्राट एक मात्र वयस्क पुरुष था जो हरम में स्वतंत्र रूप से प्रवेश करता था। यौवन प्रपात करने वाले शाही राजकुमारों को बाहर रहना पड़ता था और उनका प्रवेश वर्जित था। केवल वही पुरुष आ सकते थे जो चिकित्सक थे और वह भी बड़े परदे से ढके हुए थे। हाकिम और बाद में यूरोपीय चिकित्सक नाड़ी को महसूस करके निदान करने लगे।अंग्रेज यात्री जान मार्शल के अनुसार रोगी के चेहरे को देखे बिना या उसकी नबज़ को महसूस किये बिना निदान का एक और तरीका यह था, की रोगी के पुरे शरीर पर रुमाल को रगड़ कर पानी के जार में ढाल दिया जाता था। इसकी गंध से डॉक्टर ने बीमारी के कारण का पता लगाया और दवा लिख दी।

❖ अकबर के हरम की स्थिति:-

आर नाथ "प्राइवेट लाइफ ऑफ द मुगल्स ऑफ इंडिया" में मुगल की हरम व्यवस्था को विस्तार से लिखते हैं। उन्होंने लिखा है कि हालांकि हरम शब्द अरबी शब्द हराम (कुछ पवित्र या निषिद्ध) या पारसी शब्द हरेम (अभयारण्य) से लिया गया है, परंतु उन्होंने यहां पर संस्कृत शब्द हर्म्य का भी उल्लेख किया है। जिसका अर्थ होता है- महल।

बाबर और हुमायु की हालाँकि चार- चार से अधिक पत्नियां थी और कई रखैल भी थी। परंतु उनके जीवन में स्थायित्व का अभाव था। इसलिए वह एक स्थान पर हरम नहीं बना पाए थे। एक संस्थान के रूप में हरम की स्थापना अकबर के समय में हुई थी और इसी के अधीन यह ऐसे काम करता था जैसे कोई सरकारी विभाग करता है। इस पुस्तक में लिखा है कि सबसे रोचक बात यह है कि अकबर एक औरत से सिर्फ जीवन भर के लिए निकाह करता था। जैसे हिंदू जीवन भर साथ का वचन देते हैं और उसने कभी तलाक नहीं दिया था। उसके हरम में आने वाली औरत हमेशा के लिए हरम में आती थी। यहां तक की बादशाह की विधवाओं को भी दोबारा शादी करने की अनुमति नहीं थी और बादशाह के मरने के बाद उन्हें विधवा के रूप में शेष जीवन "सोहागपुर" नामक महल में बिताना होता था।

इसी में वे आगे लिखते हैं कि अकबर को नई-नई लड़कियां चाहिए होती थी और वह हर औरत जिस पर उसका दिल आ जाता था जिसमें अब्दुल वासी की खूबसूरत बीवी थी, भी शामिल थी। जिसका तलाक अकबर ने करवा दिया था। फिर इसमें है कि गुलाम बाजार से गुलाम औरतों को खरीदा जाता था, जबकि हिंदू समाज में अर्थात मौर्य काल में मेगस्थनीज ने लिखा है कि हिंदू समाज की एक विशेषता बहुत खास है कि यहां पर वह गुलामी की परंपरा नहीं है , जो ग्रीक और रोमन जगत में बहुत आम थी।

इसमें एक और विशेष बात यह है कि यदि हरम में राजनीतिक संबंधों के चलते ऐसी लड़की आ जाती थी जो सुंदर नहीं होती थी तो बादशाह के बिस्तर तक वह नहीं जा पाती थी। वह ऐसी औरत हो जाती थी जिनके लिए कोई ठिकाना नहीं होता था और हरम की चार दीवारों में ही अपनी इच्छाओं के चलते मर जाती थी। कोई भी उसे देखने वाला नहीं होता था और उसे बचाने वाला भी कोई नहीं होता था। मुगल काल में हिजड़ों की नियुक्ति हरम के निवासियों की रखवाली के लिए की जाती थी। और उन्हीं भी भीतर जाने की अनुमति नहीं थी। मगर वह हरम के अधिकारियों और हरम की नौकरानियों के बीच एक कड़ी होते थे अर्थात हरम की कनीज भी बाहरी मर्द और अधिकारियों से बात नहीं कर सकती थी।

इस बादशाहो का औरतों पर इतना नियंत्रण रहता था कि अगर उनके हरम की कोई औरत हिजड़ों को भी मातृत्व भाव से चुम नहीं सकती थी। जहांगीर की एक कनीज का कत्ल खुद जहांगीर ने इसलिए करवा दिया था क्यों कि उसने एक हिंजड़े को सहज वात्सल्य भाव से माथे पर चुम लिया था।

नूरजहां एम्प्रेस ऑफ मुगल इंडिया में एलिसन बैक्स फिडली एक घटना का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि नूरजहां की एक बूढ़ी कनीज को केवल इसलिए तीन दिनों तक बांधकर एक गड्ढे में धूप में रखा गया क्योंकि उसने एक हिजड़े को चुंबन कर लिया था। उसने आदेश दिया था कि उस औरत को एक गड्ढे में बाहों तक गार्ड कर रखा जाए और तीन दिनों तक उसे भूखा प्यासा रखा जाए। अगर वह 3 दिनों तक जिंदा रह जाती है तो उसे माफी मिलेगी। ।मगर वह डेढ़ ही दिनों में मर गई थी।

इसके अतिरिक्त हरम की बुद्धिमान महिलाओं को बादशाह बड़ी जिम्मेदारियां भी सोपते थे। व्यापार से जुड़ी जिम्मेदारियां इसी में शामिल थी। हरम की कई शहजादीओ ने किताबें लिखी। हुमायु की बहन गुलबदन बेगम की हुमायुनामा इसी की मिसाल है। जहांगीर की बेगम नूरजहां को भी बहुत पढ़ी-लिखी माना जाता है। राजनीतिक और साहित्यिक दोनों मामलों में बुद्धिमान की कविताएं लिखने का जुनून था। अकबर की दाई मां महमानंगा का हरम में बहुत रुतबा था। शुरुआती दौर में अकबर उससे राजनीतिक मसलों पर सलाह लिया करते थे। अकबर के 1560 से 1562 तक के काल में हरम की मजबूत स्थिति की वजह से इसे "पेटिकोट शासन" भी कहा गया।

अकबर ने अपने साम्राज्य को शक्तिशाली बनाने के लिए कई राजपूत घरानो में वैवाहिक संबंध स्थापित किए। 1562 में अकबर ने जोधाबाई से शादी की ,जो राजा भारमल की पुत्री थी। जोधाबाई का हरम में मुख्य स्थान था। उसी के गर्भ में सलीम का जन्म हुआ। जो अकबर के बाद 1606 में बादशाह बना। जोधाबाई से शादी के बाद अकबर ने भारमल को उच्च मनसब प्रदान किया ,जो 5000 का था। जोधाबाई के भाई भगवान दास को "अमीर उद दौला "की उपाधि अकबर के द्वारा दी गई और उसके भतीजे मानसिंह को 7000 का मनसब दिया गया। यह सब जोधाबाई के कारण ही हुआ था। इसके अलावा जोधपुर, जैसलमेर आदि रजवाड़ों की राजकुमारियों के साथ अकबर ने शादी की। यह सभी महिलाएं हरम में अपने पुराने धार्मिक विश्वासों को चलाती रही । उन्हें मुस्लिम बनने के लिए बाध्य नहीं किया। इस प्रकार साफ है कि अकबर के समय राजनीति में हरम का प्रभाव था।

अकबर के अंतिम समय में शाही महिलाओं ने सलीम को विद्रोह से बचाने में मुख्य भूमिका अदा की। अकबर दरबार में औरतों की दखलअंदाजी पसंद नहीं करता था। एक बार अकबर की मां हमीदा बानो बेगम, रुक्या बेगम, सुल्तान बेगम एक सुन्नी मुसलमान को नहीं बचा पाई थी जिसने धार्मिक द्वेष में लाहौर के एक सिया मुसलमान की हत्या कर दी थी।
सोलवी सदी के अंत में राजकुमार अत्यधिक पियक्कड़ बन गया था। जिसके कारण उसकी बादशाह से दुरी बन गयी। 1599 ई. में जब अकबर दक्कन छोड़ने की तयारी कर रहा था, तो हमीदा के कहने पर उसने सलीम को बादशाह का कुर्निश बना दिया। लेकिन इसके बाद भी सलीम अपनी हरकतों से बाज नहीं आया। वह अकबर के लंबे शासन से तंग आ गया था और 1601 ई. में उसने अपने पिता के खिलाफ विद्रोह कर दिया। इलाहाबाद में शाही उपाधि धारण कर ली। जब शांति वार्ता से काम न चला तो अकबर ने उससे शक्ति से निपटने का निर्णय लिया।

सलीम हरम की महिलाओं का चहेता था। वे अकबर को सलीम के खिलाफ कठोर निर्णय लेने से रोकती रही। हमीदा बानो बेगम, गुलबदन बेगम, जोधा बाई, सलीमा सुल्तान बेगम आदि ने बादशाह से सलीम को माफ करने की गुहार लगाई। सलीमा सुल्तान बेगम ने अकबर को याद दिलाया कि वह किस तरह पुत्र प्राप्ति के लिए प्रार्थना करता था। इसके बाद अकबर कुछ नरम पड़ गया और उसने सलीमा से कहा कि वह इलाहाबाद जाकर सलीम को मना कर आगरा ले आए। सलीमा सुल्तान सलीम को आगरा लाने में सफल हुई। सलीम अकबर से किसी विशेष अवसर पर मिलना चाहता था लेकिन अकबर उसे तुरंत मिलना चाहता था। अकबर बड़े प्यार से अपने बेटे से मिला और उससे कोई सवाल नहीं किया। बिना कुछ कही सुनी के सलीम वापस अपने परिवार से घुलमिल गया। 1603 ई. में सलीम ने अपने पिता को एक हजार सोने की मोहर तथा 354 हाथी भेंट किए। बादशाह ने अपनी पगड़ी अपने बेटे के सिर पर रख दी।
मई 1603 तक सब कुछ ठीक-ठाक हो गया। अब अकबर ने मेवाड़ के महाराणा प्रताप के बेटे राणा अमर सिंह के खिलाफ सैन्य अभियान के लिए सलीम को भेजने का निर्णय लिया क्योंकि राणा अमर सिंह की शक्ति बढ़ती जा रही थी। लेकिन सलीम को अपने पिता पर शक हो गया और उसने बहानेबाजी करके जाने से इंकार कर दिया। एक बार फिर हरम की महिलाओं ने सलीम का पक्ष लिया और बादशाह से अपील की कि सलीम को दरबार में ही रखा जाए। सलीम इलाहाबाद वापिस जाना चाहता था और कुछ विचार विमर्श के बाद अकबर ने भी उसे जाने की अनुमति दे दी। जो ही वह वहां पहुंचा उसने एक बार फिर अपनी पुरानी करतूतें शुरू कर दी और राज्य में आतंक फैला दिया।

अकबर इस पर बड़ा दुखी हुआ। अकबर साम्राज्य के लिए अपने बेटे और अपने बेटे को साम्राज्य के लिए बचाना चाहता था। शांति वार्ता असफल हुई। तब अकबर बड़ी फौज लेकर आगरा से निकला लेकिन रास्ते में उसे अपनी मां हमीदा बानो बेगम के गंभीर रूप से बीमार होने की खबर मिली। शुरू में अकबर को विश्वास नहीं हुआ और उसने सोचा यह सोची समझी चाल हो सकती है। क्योंकि हमीदा सलीम से बहुत प्यार करती थी। अकबर ने राजकुमार खुर्रम और हमीम को पता करने के लिए आगरा भेजा। खुर्रम वापस आया और हमीदा की बीमारी के बारे में बादशाह को बताया। अकबर तुरंत उल्टे पैर समय से आगरा पहुंचा। हमीदा 29 अगस्त 1604 को चल बसी।

सलीम को उसकी दादी की मौत के बारे में सूचित कर दिया गया। वह आगरा आया और अकबर ने उसको उसके उपहार समेत स्वीकार कर लिया। लेकिन वह सलीम को सबक सिखाना चाहता था। सलीम को नारी गृह में बंदी बना लिया गया

। शराब और अफीम बंद कर दी गई लेकिन हरम की शाही महिलाओं की गुहार पर 10 दिन के बाद उसे छोड़ दिया गया और सलीम वापस अपने महल में आ गया। इसके साथ ही सलीम के विद्रोह का अंत हो गया। इसके साथ ही सलीम का अकबर को सत्ता से हटाने का उद्देश्य सफल नहीं हो सका। हर मौके पर सलीम को शाही हरम की महिलाओं ने बादशाह के कहर से बचाया।

1556 में हुमायु की मृत्यु के बाद 14 वर्ष की आयु में अकबर बैरम खां के संरक्षण में गद्दी पर बैठा। बैरम खान की महानता उसकी स्वामी भक्ति में निहित है। भारत में मुगल सत्ता की पुनर्स्थापना में उसके सहयोग को भुलाया नहीं जा सकता। वह हर संकट की घड़ी में हुमायु के साथ रहा। हुमायु के भाग्य को बदलने में बैरम खान ने अपना सक्रिय सहयोग दिया। हेमू को पराजित करना बैरम खान का एक बड़ा कार्य था। बैरम खान का प्रभाव लगातार बढ़ रहा था। जिससे हरम दल के सदस्य घृणा करते थे।

हरम दल अकबर को बैरम खां के खिलाफ करने के लिए हर समय अवसर की तलाश में रहते थे। महामंगा जो आरम्भ से ही राजनीतिक शक्ति की इच्छुक शक्तिशाली महिला थी, का प्रभाव अकबर पर लगातार बढ़ रहा था। वह बैरम खां से नफरत करती थी। हरम दल ने बैरम खां को राज कार्यों से दूर करने की योजना बनाई। अकबर को उसकी माता के बीमार होने के बहाने से आगरा से दिल्ली बुलाया गया और इन सब लोगों ने मिलकर सम्राट को प्रेरित किया कि बैरम खां से सब राज्य शक्तियां अपने हाथ में ले और बैरम खान को राजनीतिक कार्यों से अलग कर दें। हरम दल की साजिश के अनुसार अकबर ने अब्दुल लतीफ द्वारा बैरम खान को दिल्ली से ही संदेश भेज दिया कि उसने राज्य की बागडोर अपने हाथों में लेने का निश्चय कर लिया है और बैरम खान को हज करने के लिए मक्का चले जाने चाहिए। बैरमखां ने सम्राट के आदेश को स्वीकार किया। वह अपने पद को छोड़ कर पंजाब की ओर चला गया। इस समय अकबर ने बैरम खान को भारत से निकालने के लिए पीर मोहम्मद को उसके पीछे भेजा। बैरम खान ने इसमें अपना अपमान समझा क्योंकि पीर मोहम्मद पहले उसके अधीन काम करता था। अतः उसने विद्रोह कर दिया। जालंधर के समीप उसे हरा दिया गया। सम्राट ने उसकी सेवाओं को देखते हुए उसे क्षमा कर दिया और मक्का जाने का आदेश दिया। परंतु गुजरात के पाटन नामक स्थान पर मुबारकखां नामक अफगान ने उसका कत्ल कर दिया। इस प्रकार बैरम खान का दुखद अंत हुआ।

अब हरम दल स्वतंत्र रूप से प्रशाशनिक कार्यो में प्रभावी हो गया। जिसका नेतृत्व महामंगा कर रही थी। वास्तव में सत्ता की डोर महामंगा के हाथ में आ गई थी। वह एक चतुर और अकबर के प्रति वफादार महिला थी। महामंगा ने अपने बेटे आदम खान को प्रधानमंत्री बनाने की हर संभव कोशिश की। लेकिन अकबर ने मुनीम खान को प्रधानमंत्री नियुक्त कर दिया जो पहले हरम दल का ही सदस्य था। मुनीम खान महामंगा की बढ़ती हुई ताकत से अवगत था। उसने प्रशासन में हरम की महिलाओं के बढ़ते हुए हस्तक्षेप के बारे में कई बार बादशाह को भी अवगत करवाया था। लेकिन अकबर ने इसकी और कोई ध्यान नहीं दिया।

इसी समय अकबर का ध्यान मालवा की तरफ गया। जिस पर बाज बहादुर शासन कर रहा था जो एक भोग विलास शासक था। वह अपना अधिकतर समय रंग रैलियों में बिताता था। अकबर ने 1561 में आदम खान को मालवा भेजा। बाज बहादुर हार के बाद सारंगपुर छोड़कर भाग गया। उसकी सारी संपत्ति छीन ली गई जिसमें उसकी हरम की सभी महिलाएं भी शामिल थी। रूपमती जिसके चर्चे दूर-दूर तक फैले हुए थे उसको भी पकड़ लिया गया। आदम खान के सैनिकों ने इन महिलाओं पर खूब अत्याचार किए। हरम की बहुत-सी महिलाओं ने आत्महत्या कर ली। रूपमती भी बुरी तरह घायल हो गई। वह मरना चाहती थी लेकिन आदम खान ने उसे बचा लिया और उससे झूठा वादा किया कि यदि वह अपने आप को सही रखेगी तो उसे बाज बहादुर के पास वापस भेज दिया जाएगा। इस दौरान आदम खान ने उसकी सारी संपत्ति बादशाह को न भेजकर धोखे से अपने पास ही रख ली तो अकबर ने इस बारे में महामंगा को चेतावनी दी और स्वयं सारंगपुर जाकर आदम खान को बंदी बना लिया। अगले दिन महामंगा भी सारंगपुर पहुंची और आदम खान को सारी संपत्ति बादशाह को सौंपने की सलाह दी। मामला सुलझने के बाद बादशाह वापस राजधानी आ गया। जो ही अकबर वापस गया आदम खान ने सभी महिलाओं को रूपमती समेत अपने कब्जे में ले लिया। जब यह समाचार बादशाह के पास पहुंचा तो तुरंत सभी महिलाओं को वापस लौटाने का आदेश दिया। इस समय महामंगा ने उन्हें वापस लौटाने की बजाय सभी का वध कर दिया ताकि वे सब बादशाह को कुछ बता न सके।

अकबर आदम खान से बहुत नाराज हुआ लकिन महामंगा को सीधे सीधे कुछ कह नहीं सका। महामंगा से अब अकबर का विश्वास उठ चुका था। अब अकबर हरम दल से छुटकारा पाने का प्रयत्न करने लगा। अकबर ने आदम खान को वापस बुलाकर पीर मोहम्मद को मालवा का गवर्नर बना दिया। मुनीम खा को प्रधानमंत्री के पद से हटाकर जीजी अनंगा के पति शम्सुद्दीन अहमद को प्रधानमंत्री नियुक्त किया।

शमसुद्दीन की नियुक्ति हरम को रास नहीं आई।आदम खान जो अपने आपको समकालीन राजनीति में बहुत प्रभावशाली समझता था।शमसुद्दीन की नियुक्ति पर बहुत नाराज हुआ और अकबर से बहुत चिढ़ गया।निजामुद्दीन अहमद लिखता है कि आदम खां ने यौवन के अहंकार तथा हरम दल के बहकावे में आकर प्रधानमंत्री शमशुद्दीन को एक दिन उसके कार्यालय में ही कत्ल कर दिया। इसके बाद शाही महल की तरफ बड़ा जहाँ बादशाह सो रहा था।वस्तुत वह बादशाह के पास बुरी नीयत से नहीं गया था वरन क्षमा याचना के उद्देश्य से गया था। किंतु एक पहरेदार के द्वारा उसे आगे बढ़ने से रोक दिया गया।शोर गुल से अकबर जाग गया और आजम खां के समक्ष चला गया। जब अकबर को प्रधानमंत्री के कत्ल का समाचार मिला तो बादशाह ने आदम से पूछताछ की ,तो आदम खान ने बादशाह के साथ अभद्र व्यवहार किया।अकबर ने क्रोधित होकर आदम खां को महल

से नीचे फेंकवा दिया। जिसमें आदम खान की मृत्यु हो गई।बाकी हरम दल के सदस्य सजा के डर से भाग खड़े हुए।जब माहनंगा को आदम खान की मृत्यु का समाचार मिला तो वह भी पुत्र की मृत्यु का शोक सहन न कर सकी और 40 दिन बीमार रहने के बाद उसकी भी मृत्यु हो गई।बादशाह ने खुद महामंगा को कंधा दिया और आदम खां की कब्र पर सुंदर मकबरा बनवाया। हरम दल के अन्य सदस्यों को माफ कर दिया गया। मुनीम खान को दोबारा प्रधानमंत्री नियुक्त किया।इस तरह पर्दा शासन का अंत हुआ और सही अर्थों में 1562 इसी में अकबर हिंदुस्तान का बादशाह बना।

अकबर के समय हरम से राजनीति को प्रभावित करने वाली शाही महिलाओं में से वक्तु निशा प्रमुख थी।वह हुमायु और मातून बेगम की पुत्री थी।उसका जन्म 1550 में हुआ था।उसका भाई मिर्जा मोहम्मद हाफिज काबुल का गवर्नर था जिसने 1581 में विद्रोह किया और पंजाब में लाहौर तक आ पहुंचा। जहां पर मानसिंह ने उसे रोका। अकबर खुद काबुल गया परंतु मिर्जा हकीम पहाड़ियों की तरफ भाग गया। अकबर ने उसकी जगह वक्तु निशा बेगम को काबुल का गवर्नर बनाया और मिर्जा हकीम को वक्तु निशा के कहने पर अकबर ने उसे माफ कर दिया। इसके बाद मिर्जा हकीम वक्तु निशा बेगम के नाम पर काबुल का शासन करने लगा। इस प्रकार वक्त निशा बेगम ने अपने प्रभाव से काबुल समस्या को हल कर दिया।

❖ जहांगीर के समय शाही हरम और राजनीति:-

1605 ईस्वी में अकबर की मृत्यु के बाद जहांगीर बादशाह बना तो हरम की महिलाओं ने जहांगीर को अनेक बार अकबर के क्रोध से बचाया था। सलीमा सुल्तान बेगम का प्रभाव अकबर के बाद जहांगीर के समय भी जारी रहा।अब 1606 ईस्वी में जहांगीर के बड़े बेटे खुसरो ने विद्रोह कर दिया। खुसरो को पकड़ लिया गया। हरम की महिलाओं ने खुसरो को बचाने में प्रभावशाली भूमिका अदा की।इसके बाद 1613 ईस्वी में भी खुसरो को बचाने की कोशिश हरम की महिलाओं द्वारा की गई।

जहांगीर के समय की सबसे प्रभावशाली महिला जिसका प्रभाव मुगल राजनीति पर स्पष्ट दिखाई देता है वह थी नूरजहां। नूरजहां का असली नाम था मेहरून्निसा। वह परसिया के एक अमीर ग्यास बेग की पुत्री थी। ग्यास बेग अकबर के समय हिंदुस्तान आया था।अकबर के द्वारा ग्यास बेग और उसके परिवार के अन्य सदस्यों को प्रशासन में अनेक पदों पर नियुक्त किया। ग्यास बेग को 1595 ईस्वी में काबुल का दीवान नियुक्त किया गया। ग्यास बेग की खूबियों को पहचान कर जहांगीर ने 1605 में उसे अपने आधे राज्य का दीवान बना दिया। एतमादोला का खिताब बख्शा और उसके मनसब को बढ़ाकर 1500 कर दिया लेकिन जब जहांगीर की हत्या करने की खुसरो की साजिश पर खुलासा हुआ तो उसमें एतमादोला और उसके बेटे को भी आरोपी बनाया गया। एतमादोला दीवान का पद खो चुका था और उसे कैद में डाल दिया गया लेकिन जुर्माना भरने पर छोड़ दिया गया। 2 साल बाद 1609 ईस्वी में उसे अपने पद पर फिर से बहाल कर दिया गया। इस बीच 17 साल की उम्र में मेहरून्निसा का विवाह अली कुली इससताजलु नामक एक ईरानी कर दिया गया। मेवाड़ के अभियान के दौरान अली कुली सलीम की चाकरी में लग गया। उसके साहस और बहादुरी से प्रभावित होकर सलीम ने उसे शेर अफगान का खिताब दिया जो उन दिनों कोई असाधारण खिताब नहीं था। शेर अफगान का शेष जीवन और मृत्यु और मेहरून्निसा का आगरा भेजा जाना इन सब बातों का समकालीन इतिहासकारो अलग-अलग वर्णन किया है। कुछ इतिहासकार अली कुली की मृत्यु का कारण कुतुब दिन और अली कुली के बीच पैदा गलतफहमी को मानते हैं तो कुछ इतिहासकार यह भी लिखते हैं कि मेहरून्निसा के लिए ही जहांगीर ने अलीकुली का कत्ल करवाया क्योंकि वह शादी से पहले से ही मेहरून्निसा को चाहता था लेकिन अकबर के डर से उससे शादी न कर सका।इसलिए ही आगे चलकर जहांगीर ने अलीकुली का कत्ल करवाया। मेहरून्निसा 1607 से 1611 तक आगरा में सलीमा सुल्तान बेगम की खिदमत में रही।

1611ईस्वी में नौरोज के मौके पर मीणा बाजार में मेहरून्निसा को देखकर जहांगीर उस पर आसक्त हो गया और कुछ समय बाद जहांगीर ने मेहरून्निसा से विवाह कर लिया। विवाह के समय मेहरून्निसा 35 वर्ष की थी लेकिन अपनी जिन्दादिली, बातचीत के लुभावने तरीके, अपनी सुविग्यता और असदिग्ध रूप लावण्यता के कारण वह औरो से हटकर थी। जहांगीर ने उसे नूर महल, नूरजहां और अंत में बादशाह बेगम का खिताब दिया लेकिन इतिहास में वह नूरजहां के नाम से जानी जाती है।

जहांगीर के जीवन के शेष सोलह वर्षो (१६११-१६२७) अवधि के दौरान नूरजहां की भूमिका और दरबारी राजनीती पर उसके प्रभाव को लेकर काफी विवाद रहा था। मुतमद खा जिसने अपना विवरण शाहजहाँ के शासनकाल के आरंभिक वर्षो में लिखा है कि" नूरजहां के पिता और उसके भाई आसफ खा को सीढ़ी -दर-सीढ़ी इतने उच्चे स्थान पर पहुंचा दिया गया कि साम्राज्य के सभी महत्वपूर्ण मामलों पर इस परिवार के सदस्यों का नियंत्रण हो गया और उसके (नूरजहाँ)रिश्तेदारों और उससे सम्ब्दीत दूसरे लोगो को तरह- तरह की महरबानियो से नवाजा गया। वह आगे कहता है उस परिवार के गुलामो ,आशिरतो या रिश्तेदारों में ऐसा कोई नहीं बचा जिसे कोई संतोष जनक मनसब या जागीर नहीं दी गई। अंत में वह लिखता है की हिंदुस्तान के विस्तृत क्षेत्र के कुछ चुनिंदा हिस्से उस महिला के रिश्तेदारों की जागीर थे।"

लेकिन कुछ विद्वानों का कहना है कि यद्यपि सम्राट के साथ नूरजहाँ के विवाह से एतमादोला और आसफ खा लाभान्वित हुए तथापि मूलतः अपने स्थान के लिए वे उसके ऋणी नहीं थे ,जैसा कि जहांगीर अपने संस्मरण में कहता है की सेवा की वरीयता, इमानदारी के परिणाम और राजकाज के अनुभव के आधार पर एतमादोला को मैंने अपने राज्य की वजारत के ऊंचे पद पर प्रतिष्ठित कर दिया। 1611 इ में अपनी नियुक्ति के समय उसका दर्जा केवल 1500 का था लेकिन एक साल के अंदर उसे 4000 जात और1000 सवार का स्थान दे दिया गया। उसके बेटे आसिफ खान को भी बहुत सुविज्ञ चतुर और पराक्रमी समझा जाता था तथा वह मीर बक्शी के पद पर आसीन रहा। खुर्रम यानी भावी शाहजहां से उसकी बेटी अर्जुम्मन बानो बेगम के विवाह से उसकी स्थिति और मजबूत हो

गई ।

आधुनिक इतिहासकार डॉक्टर बेनी प्रसाद की परिकल्पना है कि जहांगीर से नूरजहां के विवाह के कुछ दिन बाद नूरजहां ,उसके पिता एतमादोला ,भाई आसफ खा और शहजादा खुर्रम की "चौकड़ी " मुगल दरबार में सर्वोपरि हो गई और 1620 ईसवी तक वह इसी स्थिति में रही। उनका कहना है कि शाही सेवा में रिक्त होने वाले अधिकांश स्थानों पर अपने नजदीकियों को नियुक्त कर इस चौकड़ी ने अपनी शक्ति को सुदृढ़ कर दिया। यहां तक कि इस चौकड़ी की मेहरबानी इज्जत और रुतबा प्राप्त करने का एकमात्र वसीला बन गई। इससे अन्य सरदारो में ईष्या और विरोध का भाव जगा। बेनी प्रसाद के अनुसार इसके फलस्वरूप इस दौर में दरबार दो गुटों में बट गया। एक गुट नूरजहांनी चौकड़ी के अनुगामियों का था और दूसरा उसके उन प्रतिद्वंद्वियों का था, जो गद्दी का वारिस खुसरो को बनाना चाहते थे।

डॉक्टर बेनी प्रसाद 1622 ईसवी के विद्रोह और 1620 ईसवी में चौकड़ी के भंग होने का कारण भी नूरजहां के जोड़-तोड़ को मानते हैं। उनका कहना है कि सत्ता की भूखी नूरजहां को लगा कि अगर शाहजहां गद्दी पर बैठ गया तो वह उसे पृष्ठभूमि में फेंक देगा। इसलिए उसने उसे विस्थापित करने के लिए और गद्दी पर बैठने के लिए उसे एक अधिक भरोसेमंद औजार को ढूंढा यानी उसके भाई शहरयार को। जिसका विवाह उसने अपने पहले पति अफगान से उत्पन्न बेटी लाडली बेगम से कर दिया। जहांगीर के शासनकाल के अंतिम 7 वर्षों का मार्गदर्शक सूत्र अपने उम्मीदवार के लिए रास्ता साफ करने की नूरजहां की कोशिशों में निहित दिखाई देती है। डॉक्टर बेनी प्रसाद के अनुसार खुर्रम के साथ नूरजहां की सांठगांठ के संबंध में 1611ईसवी और 1620 ईसवी का कोई समकालीन साक्ष्य नहीं मिलता। यह आरोप यूरोपीय स्त्रोत्रों के खास तौर से जहांगीर के दरबार में इंग्लैंड के दूत सर टॉमस रो के विवरण के आधार पर लगाया गया है। यह लोग फ़ारसी ठीक से नहीं जानते थे इसलिए ये मुख्य रूप से उन दिनों उड़ रही अफवाहों पर भरोसा करके इन्होने लिखा कि 1616 ईसवी के बाद नूरजहां और खुर्रम के बीच मनमुटाव की बात ये लोग करते हैं ।

1622 ईसवी में जब जहांगीर अफीम के नशे की लत के कारण तथा अस्थमा की बीमारी के कारण बहुत कमजोर हो चुका था। तब नूरजहां का प्रभाव और अधिक मुगल राजनीति में बढ़ गया था क्योंकि जहांगीर शाहजहां पर विश्वास नहीं करता था। जो शाहजहां पहले ही शासन प्राप्ति की लालसा के कारण अपने बड़े भाई खुसरो का कत्ल कर चुका था। जहांगीर इस समय पूरा विश्वास अगर किसी पर कर सकता था तो वह थी नूरजहां। अबुल फजल एक स्थान पर वर्णन करता है कि जहांगीर बार-बार यह कहा करता था कि "अगर उसे प्रतिदिन कुछ शराब और एक शेर का मास मिलता रहे तो वह इससे संतुष्ट है क्योंकि बाकि का सारा कार्य नूरजहां संभाल सकती है "। इलाबेल इस बात का वर्णन करता है कि नूरजहां हरम से ही तथा दरबार में अमीरों को आदेश देती थी।

बादशाह की तरह ही नूरजहां भी नगाड़े का प्रयोग करने लगी थी। 1622 के बाद नूरजहां का नाम सिक्कों पर अंकित किया गया। अनेक फरमान नूरजहां द्वारा जारी किए गए। अनेक बार वह झरोखे में बैठती थी और लोगों की समस्याएं सुनती थी। मुतमद खा वर्णन करता है कि सभी फरमान और सिक्कों के साथ नूरजहां का नाम अवश्य जुड़ा होता था। कुछ फरमाना पर जहांगीर के साथ नूरजहां का नाम प्राप्त होता है। यह सब 1622 से 1627 के दौरान उस समय हुआ जब जहांगीर काफी कमजोर हो चुका था। इसके साथ यह बिल्कुल सच है कि नूरजहां के नाम का खुतबा कभी नहीं पढ़ा गया । यह अधिकार जहांगीर ने अपनी मृत्यु तक किसी को नहीं दिया। 1622 ईसवी के बाद जहांगीर हर कदम पर नूरजहां का साथ लेता था। इस समय के दौरान नूरजहां द्वितय शासक की तरह काम करती थी। 1622 में जब एतमादोला चल बसा। वली अहमद शा खुले विद्रोह पर उतर आया और महावत खा जैसे महत्वकांक्षी सरदारों ने सम्राट को अपने हाथों की कठपुतली बनाने का प्रयत्न आरंभ कर दिया। यही वह समय था जब नूरजहां ने हरम से सक्रिय राजनीति में भाग लिया और साम्राज्य को टूटने से बचाया।

1622 ईसवी के बाद नूरजहां को बहुत ही कठिन स्थिति का सामना करना पड़ा। उसका मुख्य प्रयत्न अपने पति के जीवन और प्रतिष्ठा की रक्षा करना था। यह कार्य उसने सफलतापूर्वक संपन्न किया। नूरजहां के परिवार के हाल के एक अध्ययन में इरफान हबीब ने एतमादोला और उसके परिवार द्वारा प्राप्त महत्वपूर्ण पदों का विवरण प्रस्तुत किया है। उदाहरण के लिए 1611 ईसवी और 1616 ईसवी के बीच एतमादोला वजीर के पद पर मुकमल के साथ ही लाहौर का सूबेदार नियुक्त किया गया और उसके बेटे आसफ खा ने कुछ समय तक वकील के रूप में काम किया। 1621 ईसवी में इमाम तोला की मृत्यु के समय लाहौर और कश्मीर के अलावा बंगाल ,उड़ीसा और अवध के तीनों सूबे उसके परिजनों के हाथ में थे। इमाम तोला की मृत्यु से उसके परिवार की स्थिति में कोई गिरावट नहीं आई। आसफ खा कुछ और समय तक वकील बना रहा और मीर बक्शी के पद पर नूरजहां का एक रिश्तेदार इसदहत खा आसीन हो गया। इसके अलावा लाहौर, कश्मीर मुल्तान ,थट्टा, आगरा की सूबेदारी गुजरात और उड़ीसा की सूबेदारी इस परिवार के सदस्यों के हाथ में थी।

इस वर्णन से यह सिद्ध होता है कि नूरजहां का परिवार उस समय कितना शक्तिशाली था ,जैसा इससे पहले मुतमद खा ने ऐसा ही वर्णन अपनी रचना में किया है तथापि जैसा कि इरफान हबीब बताते हैं कि" इसका मतलब यह नहीं है कि पूरा मुगल उमरा वर्ग दो गुटों में बट गया। नूरजहां के परिवार के कृपा पात्रों और समर्थकों के गुट तथा नवोदित लोगों की समृद्धि और अहंकार से इच्छाप्रद पुराने सरदारों के गुट में ,जब महावत खान के हाथों में अपरिमित सत्ता थी, छीनने की कोई कोशिश नहीं की गई"।

❖ मुगल बादशाह शाहजहां का हरम और उसकी स्थिति:-

मुगल बादशाह शाहजहां के शासनकाल को भारत के इतिहास का गोल्डन पीरियड कहा जाता है। यह भी कहा जाता है कि शाहजहां के शासन में प्रजा बहुत खुश थी। भारत का सबसे ज्यादा विकास और भारत में सबसे ज्यादा इमारतों का निर्माण भी इसी काल में हुआ। शाहजहां ने ताजमहल का निर्माण करवाया था। प्यार के प्रतिक की निशानी के रूप में देखा जाने वाला आगरा के ताजमहल की गिनती दुनिया के सात अजूबों में होती है जिसे सन 1631 से 1643, के बीच मुगल बादशाह शाहजहां ने अपनी पत्नी मुमताज महल की याद में बनवाया था। हालांकि जब भी मुगल बादशाह शाहजहां की बेगम के बारे में बात करते हैं तो, हमारे जहन में सबसे पहला नाम मुमताज महल का आता है क्योंकि शाहजहां और मुमताज महल की प्रेम कहानी से कौन वाकिफ नहीं है। लेकिन क्या आपको पता है शाहजहां की बेगम मुमताज महल के अलावा और भी कई बेगमे थी। जी हां, हम आपको मुगल बादशाह शाहजहां की कुछ ऐसी बेगमो के बारे में जानकारी दे रहे हैं, जिनका नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज है।

मुगल साम्राज्य का दौर लगभग 1526 से 1707 तक रहा है जिसकी स्थापना बाबर ने पानीपत की पहली लड़ाई में इब्राहिम लोदी को हराकर की थी। इसके बाद हिमायू ,अकबर, जहांगीर ,शाहजहां के बाद अंतिम मुगल शासक औरंगजेब था, जिन्होंने अपने शासन के दौरान समाज का निर्माण किया। इसके अलावा कुछ महिलाएं भी थी जिन्हें अपना योगदान नीति निर्माण में दिया। अकबर के पोते शाहजहां मुगल सम्राज्य के सबसे महान बादशाहो में से एक थे। शाहजहां का जन्म 5 फरवरी 1592 को लाहौर में हुआ। शाहजहां के माता पिता का नाम जहांगीर और जगत गोसाई यानी जोधाबाई था। शाहजहां और मुमताज महल की प्रेम कहानी से कौन वाकिफ नहीं है। शाहजहां ने 1628 से 1658 तक करीब 30 साल शासन किया और उन्होंने अपने शासनकाल में कई ऐतिहासिक और सांस्कृतिक कार्य करवाए थे। साथ ही उन्होंने आगरा में अपनी एक बेगम के लिए ताजमहल को बनवाया था। हिंदुस्तान में शाहजहां ने कई साल शासन किया था। इस दौरान शाहजहां ने कई शादियां भी की थी:-

❖ कंधारी बेगम:-

कंधारी बेगम शाहजहां की पहली पत्नी थी। वह फारस की राजकुमारी और राजकुमार सुल्तान मुजफ्फर हुसैन मिर्जा की सबसे छोटी बेटी थी। उसका जन्म कंधार में हुआ और उन्होंने 12 दिसंबर1609 को शाहजहां से शादी की थी। कंधारी बेगम की सौतेली माँ राजकुमारी खानम सुल्तान थी जो बादशाह अकबर की बेटी और बादशाह जहाँगीर की बहन थी। कहा जाता है कि कंधारी बेगम बहुत ही रूहानी मिजाज की महिला थी जिसकी वजह से वह ज्यादातर महल से अलग रहा करती थी।

❖ अर्जुम्मन बानो बेगम :-

अर्जुम्मन बानो बेगम को मुमताज महल के नाम से जाना जाता है। और मुमताज महल के नाम से कौन वाकिफ नहीं है। यह शाहजहां की सबसे खास बेगम थी। शाहजहां मुमताज महल से बहुत प्रेम करते थे। नूर जहां के बड़े भाई की बेटी थी। मुमताज महल ने 30 अप्रैल1612 को आगरा में शाहजहां से शादी की लेकिन उसकी सगाई 30 जनवरी 1607 को हुई थी। 5 साल बाद उन्होंने शादी कर ली। 17 जून 1631 को उनकी मृत्यु हो गई और उन्होंने शाहजहां के 14 बच्चों को जन्म दिया। वह 1628 से 1631 तक मुगल साम्राज्य की मुख्य पत्नी और महारानी थी। उनकी बेटी गोहर बानो बेगम को जन्म देते समय उनकी मृत्यु हो गई और उन्हें ताजमहल में दफनाया गया।

❖ अकबराबादी महल:-

मुमताज महल के अलावा अकबराबादी महल भी शाहजहां की बेगम थी। अकबराबादी महल को इज्ज-उन- निसा बेगम के नाम से जाना जाता है। यह शाहजहां की चौथी पत्नी थी। इन्होंने शाहजहां से शादी दो सितंब 1617 की थी। बता दें कि अकबराबादी महल शाहनवाज खान की बेटी और अब्दुल रहीम खाना की पोती थी। वह प्रधानमंत्री बैरम खां की पर पोती और सम्राट अकबर के पालक पिता भी थी। उन्होंने 25 जून 1619 को एक बेटे सुल्तान जहांन अफरोज मिजरा को जन्म दिया लेकिन मार्च 1621 में उनकी मृत्यु हो गई।

इसके अलावा शाहजहां की और भी कई बेगमे जैसे फतेहपुरी महल ,सर हिंदी बेगम आदि थी जिन्होंने मुगल शासन काल में अहम भूमिका निभाई थी। लेकिन शाहजहां के हरम की सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही है कि उसका हरम सबसे अधिक बदनाम रहा जिसके कारण दिल्ली का रेड लाइट एरिया जीबी रोड बसा। इतिहासकार डॉक्टर स्मिथ ने लिखा है कि शाहजहां के हरम में 8000 रखेले थी जो उसे उसके पिता जहांगीर से विरासत में मिली थी। उसने अपने पिता की संपत्ति को और बढ़ाया और अन्य हिंदू परिवारों से बलात महिलाओं को लाकर हरम को बढ़ाता ही रहा। कहते हैं कि उन्हीं भगाई गई महिलाओं से दिल्ली का रेड लाइट एरिया जीबी रोड गुलजार हुआ था और वहां इस धंधे की शुरुआत हुई थी। जबरन अगवा की हुई हिंदू महिलाओं की यौन गुलामी और यौन व्यापार को शाहजहां पश्र्य देता था और अक्सर अपने मंत्रियों और संबंधियों को पुरस्कार स्वरूप अनेक हिंदू महिलाओं को उपहार में दिया करता था। वह नर पशु यौनाचार के प्रति इतना आकर्षित और उत्साहित था कि हिंदू महिलाओं का मीना बाजार लगाया करता था। यहां तक कि अपने महल में भी सुप्रसिद्ध यूरोपीय यात्री बर्नियर ने इस विषय में टिप्पणी की थी कि महल में बार-बार लगने वाले मीना बाजार जहां अगवा करके लाई हुई सैकड़ों हिंदू महिलाओं का क्रय विक्रय हुआ करता था। राज्य

द्वारा बड़ी संख्या में नाचने वाली लड़कियों की व्यवस्था और नपुंसक बनाए गए। सैकड़ों लड़कों की हरम में उपस्थिति शाहजहां की अनंत वासना के समाधान के लिए ही थी।

शाहजहां को प्रेम की मिसाल के रूप में पेश किया जाता है क्योंकि उसने 8000 औरतों को अपने हरम में रखने वाला अगर किसी एक में ज्यादा रूचि दिखाएं तो वह सब प्यार ही कहा जाएगा। आप यह जानकर हैरान हो जाएंगे कि मुमताज का नाम मुमताज महल नहीं था बल्कि उसका नाम अर्जुम्मन बानो बेगम था। और जिस शाहजहां और मुमताज की प्यार की इतनी बातें कहीं जाती है, वह शाहजहां की ना तो पहली पत्नी थी और ना आखरी।

मुमताज शाहजहां की 7 पत्नियों में चौथी थी। इसका मतलब है कि शाहजहां ने मुमताज से पहले तीन शादियां कर रखी थी और मुमताज से शादी करने के बाद भी उसका मन नहीं भरा तो उसके बाद भी उसने तीन और शादियां की। यहां तक कि मुमताज के मरने के 1 हफ्ते के अंदर ही उसकी बहन फरजाना से शादी कर ली थी जिसे उसने रखेल बना कर रखा था। जिससे शादी करने से पहले ही शाहजहां एक बेटा भी था। अगर शाहजहां मुमताज से इतना प्यार करता था तो मुमताज से शादी के बाद भी शाहजहां ने तीन ओर शादिया क्यों की?

शाहजहां सात बीवियों में सबसे सुंदर मुमताज नहीं बल्कि इशरत बानो थी जो कि उसकी पहली पत्नी थी। गौर करने लायक बात यह भी है कि 38 वर्षीय मुमताज की मौत कोई बीमारी से नहीं बल्कि 14 बच्चे को जन्म देने के दौरान अत्यधिक कमजोरी के कारण हुई थी। शाहजहां कामुकता के लिए इतना कुख्यात था कि कई इतिहासकारों ने उसे अपनी सगी बेटी जहांआरा के साथ संभोग करने का दोषी तक कहा है। शाहजहां और मुमताज महल की बड़ी बेटी जहांआरा बिल्कुल अपनी मां की तरह लगती थी। इसलिए मुमताज की मृत्यु के बाद उसकी याद में शाहजहां ने अपनी ही बेटी जहांआरा को भोगना शुरू कर दिया था। शाहजहां को जहांआरा पर इतना प्यार था कि उसने इस का निकाह तक नहीं होने दिया। पिता बेटी के प्यार को देख कर महल में चर्चा हुई तो मौलवीओ की एक बैठक बुलाई गई और उन्होंने इस बात को जायज ठहराने के लिए एक हदीस का उदहारण दिया और कहा कि माली को अपने द्वारा लगाए गए पेड़ का फल खाने का हक है।

इतना ही नहीं किसी भी आशिक को वह जहांआरा के पास भटकने नहीं देता था। कहा जाता है कि एक बार जहां आरा जब अपने आशिक के साथ इश्क कर रही थी तो शाहजहां वहां आ गया जिससे डरकर वह हरम के तंदूर में छिप गया। शाहजहां ने तंदूर में आग लगवा दी और उसे जिंदा जला दिया।

दरअसल अकबर ने यह नियम बना दिया था कि मुगलिया ख़ानदान की बेटियों की शादी नहीं होगी। इतिहासकार इसके लिए कई कारण बताते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि मुगल खानदान की लड़कियां अपनी भूख मिटाने के लिए अवैध तरीके से दरबारी नौकर के साथ, रिश्तेदार के साथ, सगे सम्बंदियों का सहारा लेती थी। कहा जाता है कि जहांआरा अपने पिता के लिए लड़कियां भी फंसा कर लाती थी। कहां जाता है कि जहांआरा अपने पिता के लिए लड़कियां भी लेकर आती थी जहांआरा की मदद से शाहजहां ने मुमताज के भाई शाइस्ता खान की बीवी से कई बार बलात्कार किया था। शाहजहां के राज ज्योतिष की 13 वर्षीय ब्राह्मण लड़की को जहांआरा ने अपने महल में बुलाकर धोखे से नशा देकर अपने पिता के हवाले कर दिया था जिसे शाहजहां ने अपनी उम्र के 58 वर्ष में उस 13 वर्ष की ब्राह्मण कन्या से निकाह किया था। बाद में उसी ब्राह्मण कन्या ने शाहजहां के कैद होने के बाद औरंगजेब से बचने और एक बार फिर से हवस का शिकार बनने से खुद को बचाने के लिए अपने हाथों अपने चेहरे पर तेजाब डाल दिया था।

शाहजहां शेखी मारी करता था कि वह तैमूर लंग का वंशज है जो भारत में तलवार और अग्नि लाया था। उज्बेकिस्तान की जंगली जानवर तैमूर से और उसकी हिंदुओं के रक्तपात की उपलब्धि से वह इतना प्रभावित था कि उसने अपना नाम तैमूर द्वितीय रख लिया था। बहुत प्रारंभिक अवस्था से ही शाहजहां ने काफिरों के प्रति युद्ध के लिए साहस व रुचि दिखाई थी।

वह अलग अलग इतिहासकारो ने लिखा है कि शहजादे के रूप में ही शाहजहां ने फतेहपुर सिकरी अधिकार कर लिया था और आगरा शहर में हिंदुओं का भीषण नरसंहार किया था। भारत यात्रा पर आए डेला वेले के अनुसार शाहजहां की सेना ने भयानक बर्बरता का परिचय दिया। हिंदू नागरिकों को घोर यातनाओ द्वारा अपने संचित धन को दे देने के लिए विवश किया गया और अनेको उच्च कुल की कुलीन हिंदू महिलाओं का शील भंग कर दिया गया। कश्मीर से लौटते समय 1632 में शाहजहां को बताया गया कि अनेक मुस्लिम बनाई गई महिलाएं फिर से हिंदू हो गई है और उन्होंने हिंदू परिवारों से शादी कर ली है। शाहजहां के आदेश पर इन सभी हिंदुओं को बंदी बना लिया गया और उन सभी पर इतना आर्थिक दंड लगाया गया कि उनमें से कोई भुगतान नहीं कर सका। तब इस्लाम स्वीकार कर लेने और मृत्यु में से एक को चुन लेने का विकल्प दिया गया। जिन्होंने धर्मांतरण स्वीकार नहीं किया उन सभी पुरुषों का सिर काट दिया गया। लगभग 4500 महिलाओं को मुसलमान बना लिया गया और उन्हें अफसरों और शहंशाह के नजदीकी लोगों और रिश्तेदारों के हरम में भेज दिया गया।

1657 में शाहजहाँ बीमार हो गया और उसके बेटे औरंगजेब ने उसे उसकी बेटी जहांआरा के साथ आगरा के किले में बंद कर दिया गया परंतु औरंगजेब ने अपने पिता के ऐसो आराम का पूरा इंतजाम रखा। अपने पिता की कामुकता को समझते हुए उसे अपने पिता के साथ 40 रखेल रखने की इजाजत दे दी और दिल्ली आकर अपने पिता के हजारों रखेलों में से कुछ गिने-चुने औरतों को अपने हरम में डालकर बाकी सभी को किले से बाहर निकाल दिया। इन हजारों महिलाओं को भी दिल्ली के उसी हिस्से में पनाह मिली जिसे आज दिल्ली का रेड लाइट एरिया जीबी रोड कहा जाता है जो उसके अब्बा शाहजहां की मेहरबानी से ही बसा और गुलजार हुआ। शाहजहां की मृत्यु आगरा के किले में ही 22 जनवरी 1666 में 74 साल की उम्र में हुई। द हिस्ट्री चैनल के

अनुसार अत्यधिक कामोत्तेजक दवाइयां खा लेने के कारण उसकी मौत हुई यानी जिंदगी के आखिरी वक्त तक वह अय्याशी ही करता रहा था।

❖ औरंगजेब का हरम और उसकी स्थिति:-

भारत के सबसे विवादास्पद मुगल शासक का निधन बीमारी के बाद 3 मार्च 1707 हो गया था। इतिहास में औरंगजेब को बहुत कठोर दिल वाला और स्त्रियों से दूर रहने वाला मुगल बादशाह कहा जाता है लेकिन वह भी प्यार में दो बार बहुत बुरी तरह गिरफ्तार हुआ। इसमें पहला प्यार उसे गाने वाली हीराबाई से हुआ जो बहुत ही खूबसूरत थी, एक क्रिश्चियन युक्ति थी। आमतौर पर यह माना जाता है कि औरंगजेब बहुत शुष्कमिजाज और धर्म के लिए कटटर शासक था। हकीकत में औरंगजेब को कई बार प्यार हुआ था जिसमें दो प्यार के किस्से तो किताबों में लिखे मिले जाते हैं। पहला किस्सा तबका है जो वो एकदम युवा था और दूसरा किसका तबका है जो वह दिल्ली की गद्दी पर आसीन हुआ और उसका दिल बड़े भाई की बीवी पर आ गया था। इसके अलावा औरंगजेब का भी हरम था। उसकी एक चर्चित रखेलें भी थी। हम यहां जिसकी चर्चा करने जा रहे है वो उसका पहला प्यार है जिसे औरंगजेब जिंदगी में कभी भूल नहीं पाया। इसके किस्से कहीं जगह मिल जाते हैं उसका नाम हीराबाई था। वह इसई थी। औरंगाबाद के पास उसके मौसा जी के यहां हरम में रहने वाली एक मामूली लड़की थी लेकिन बहुत ही सुंदर और गजब की गायिका थी।

औरंगजेब तब युवा था तथा उसकी बहादुरी के चर्चे तो खूब थे। लकिन शाहजहाँ का सबसे पिरय था उसका बड़ा भाई दारा शिकोह ,जब बादशाह शाहजहाँ ने औरंगजेब को दुबारा दक्कन को संभालने भेजा तो वो वहां जाने नहीं जाना चाहता था लेकिन बादशाह का आदेश था इसलिए जाना ही पड़ा। सियासी चालों ने उसे खिन्न कर दिया था। वह दिल्ली से दूर जाना भी नहीं चाहता था। हेरंब चतुर्वेदी ने अपनी किताब "दो सुल्तान, दो बादशाह और उनका प्रणय प्रवेश "में औरंगजेब के जीवन में आए प्यार पर लिखा है। किताब कहती है ,कि औरंगजेब अजीब मनोदशा में दक्कन पहुंचा। इसके बाद वह अपनी मौसी से मिलने के लिए जैनाबाद बुरहानपुर चला गया। उसके मौसा जी थे अमीर खलील जिनको बाद में औरंगजेब ने खानदेश का सूबेदार भी बनाया था। इन मौसा और मौसी से उसके रिश्ते काफी अच्छे थे। जब वो वहां पर प्रवास कर रहा था तो वह मानसिक अस्थिरता की हालत में मन बहलाने की नियत से घूमने लगा। औरंगजेब घूमते घूमते जैनाबाद बुरहानपुर के हिरन उद्यान में जा पहुंचा। तभी वहां वो जनाबादी से रूबरू हुआ, जिसका संगीत कौशल और अदाएं बहुत दिलकश थी। किसी को भी अपनी ओर खींच ले लेती थी। किताब कहती है कि औरंगजेब जब वहां पहुंचा तभी जनाबादी हरम की अन्य स्त्रिओ के साथ वहां आई। फलों से लदे आम के पेड़ से आम तोडा और आगे बढ़कर गाना गाने लगी और शहजादे की मौजूदगी को नजरअंदाज कर रही थी। उसके नाजो अदा ,अप्रियतम सुंदरता और गाने गुनगुनने के साथ बेतक्लुफ्फ अंदाज ने औरंगजेब का ध्यान उसकी और खींचा। औरंगजेब उस पर मोहित हो गया। इसके बाद उसने किसी तरह से जनाबादी को हासिल किया हालाँकि वह कठोर इंद्रिय दमन, संयम और पवित्र परीक्षण के लिए जाना जाता था लेकिन इसके बाद भी वो जैनाबादी पर पूरी तरह आसक्त हो चूका था।

औरंगजेब को जो भी जानते थे वो उसके इस व्यवहार पर चकित और हैरान थे। किसी के समझ में नहीं आ रहा था कि औरंगजेब अपने मिजाज के खिलाफ ऐसा व्यवहार क्यों कर रहा है। कहां जा सकता है कि जनाबादी से मुलाकात ने नया उत्साह दे दिया था।

औरंगजेब दक्कन में शासन प्रशासन के अलावा अगर कहीं वक्त गुजरता था तो सिर्फ जैन आबादी के साथ। जनाबादी का जादू उस पर किस तरह छाया रहा इसकी हमें अनेक उदाहरण मिलते हैं। एक बार तो हद ही हो गई एक दिन जनाबादी ने मदिरा का प्याला औरंगजेब के हाथों में दिया और पीने का निवेदन किया। औरंगजेब जितनी मजबूती से इसको मना करता वो उतने ही प्यार से निवेदन करती। वह उसको अपनी अदाओं से रिझाती, कसमें खिलाती और प्यार का वास्ता देती। इह काम के लेखक के अनुसार जैसे ही औरंगजेब ने मदिरा का प्याला होठो से लगाया तभी जैनाबादी ने उससे प्याला छिन लिया। और उसने कहा मेरा उद्देश्य तुम्हारे प्रेम की परीक्षा लेने का था। औरंगजेब के इस प्यार की खबर दिल्ली में शाहजहाँ तक जा पहुंची।

अब औरंगजेब की हर शाम और खाली वक्त जैनाबादी के साथ ही गुजरता। तभी 1654 ईस्वी में उसकी मृत्यु हो गई। जिससे औरंगजेब गम में डूब गया और औरंगजेब ने पूरे शासकीय सम्मान के साथ उसे दफनाया।

❖ मुग़ल शहज़ादियों के विवाह पर प्रतिबन्ध:-

मुग़ल बादशाहो का हरम अकबर के समय से ही मुग़ल शहज़ादियों से भरने लगा था क्योकि अकबर ने शहज़ादियों के विवाह करने की परम्परा बंद कर दी थी। इस अमानवीय परम्परा के एक खास कारण था। अकबर की सात बहने थी - बक्शी बनु बेगम, अक़ीक़ा सुल्ताना बेगम, अमीना बनु बेगम, बखत उन्नीसा बेगम, सकीना बानू बेगम, जहांन सुल्ताना बेगम तथा फखर उन्नीसा बेगम इन सातो के पति 'मिर्ज़ा कहलाते थे और यह सातो 'मिर्ज़ा' सवयं को शेहशाह अकबर के बराबर समझते थे। वे अकबर के साथ न केवल उदंडता पूर्वक व्यव्हार करते थे। अपितु समय मिलते ही अकबर की सल्तनत उखड कर अपनी सल्तनत कायम करने के लिए बगावत करते थे। अकबर अपनी बहनो की लिहाज के कारण अपने बहनोइयों को पकड़ कर न तो मार ही पाता था और न उन्हें कैद कर पाता था। अंत में तंग आकर जब तक अकबर ने अपने बाघी बहनोइयों को मार नहीं डाला तब तक उनके द्वारा की जाने वाली बगावत समापत नहीं हुयी। इस कारण अकबर ने नियम बना दिया की भविष्य में मुग़ल शहज़ादियों के विवाह नहीं किये जायेंगे। इसी नियम पर चलते हुए अकबर ने अपनी चारो पुत्रियों आराम बानू बेगम, खानम सुल्तान बेगम, शकर उसनीसा बेगम तथा मेहरुनिसा बेगम के विवाह नहीं किये थे।

अकबर के पुत्र जहाँगीर ने भी अपनी तीनो शहज़ादियों मजयार बहरुज, बहार बानो बेगम ,और नित्तार बेगम की शादिया नहीं की ,फिर भी जहाँगीर के पुत्र शहजहॉ को अपने राज्यारोहण से पहले अपनी सोतैली बहन लाड़ली बेगम के पति से निपटना पढ़ा था। जहाँगीर ने नूरजहाँ के पति शेर अफगान को मार कर नूरजहाँ से विवाह किया था। शेर अफगान से नूरजहाँ की एक बेटी थी जिसे लाड़ली बेगम कहा जाता था। जब नूरजहाँ को बंगाल से आगरा लाया गया तो लाड़ली बेगम भी उसके साथ जहाँगीर के हरम में चली आई थी तथा उसका लालन पालन शहज़ादियों की तरह हुआ था।जब लाड़ली बेगम जवान हुई तो नूरजहाँ ने लाड़ली बेगम का विवाह अपने पति जहाँगीर की एक अन्य बेगम के पेट से जन्मे पुत्र शहरयार से कर दिया। जब जहाँगीर बीमार पढ़ा तो शहजहॉ जो की उन दिनों खुर्रम के नाम से जाना जाता था। शहरयार को मार कर ही बादशाह बन स्का था। हालाँकि शहरयार को खुरम के हाथो इसलिए भी मरणा ही था क्यों की वह खुरम का सौतेला भाई भी था तथा शहजहॉ जनता था की उसे अपने १८ चाचाओं और भाइयो को मरे बिना मुगलो का तखत हासिल नहीं होने वाला था। इसलिए शहजहॉ ने अपने दादा अकबर द्वारा शहज़ादियों का विवाह न करने के सम्बंद में बनाए गए। नियम को अपने समय में भी सख्ती से लागु कर रखा था और अपनी चारो शहज़ादियों में से किसी का भी विवाह नहीं किया था। इस नियम की पलना करने से बादशाह को ज्वाइयो की बगावत की सम्भावना से और भावी बादशाह को बहनोइयों की बगावत की समस्या से तो छुटकारा मिल गया था। किन्तु एक नई समस्या पैदा हो गई थी। अब शहजादियाँ जीवन भर बादशाह के हरम का हिस्सा बनकर रहती थी और वे भावी बादशाह के लिए होने वाले उत्तराधिकार के युद्ध में खुलकर भाग लेती थी। शहजहॉ का हरम भी इस खतरनाक समस्या से सक्रमित था। उसकी चारो शहजादियाँ भी अब जवान हो गई थी और उन्होंने भी अपने भाइयो के साथ मिलकर मुगलिया राजनीति के खुनी खेल में भाग लेना आरम्भ कर दिया था। चारो शहजादियों ने एक एक भाई दामन पकड़ लिया था। जहाँ आरा ने डरा शिकोह को रोशन आरा ने औरेंग्जेब को गोहर आरा ने मुराद को और पुरहनर बेगम ने शाह शुजा को बादशाह बनाने के लिए राजनितिक शतरंज पर षडयंत्रो की खुनी गोटिया बिचानी आरम्भ कर दी थी। चारो शहजादियाँ अपने पसंद के भाई को तख्ते ताउस पर बिठाकर कोहिनूर हीरे तथा दिल्ही के लाल किले का स्वामी बनाने का ख्वाब देखा करती थी। इस परकार अकबर द्वारा बनाई गई निति के कारण मुगलो को बहनोइयों और ज्वाइयो की समस्याओं से तो मुक्ति मिल गई थी। किन्तु अब मुग़ल बादशाह बहनो और बेटियों के षडयंत्रो से घिर गई थे।

निष्कर्ष:-

इस प्रकार इस शोध पत्र का क्षेत्र वस्तुतः नारी समष्टि तक सीमित था जिसका मुगल बादशाहो से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष संबंध था। इसमें मुगल राजशाही से रक्त एवं वैवाहिक संबंधों के माध्यम से जुड़ी हुई महिलाओं के साथ ही वे महिलाएं भी आ गई हैं ,जो मुगल शाही हरम में अधिकारी कर्मचारी अथवा सेविका के रूप में नियुक्ति जाती थी। मुगल राजनीति एवं प्रशासन में महिलाओं को भागीदारी के साथ ही उनके सांस्कृतिक जीवन के विविध पक्षों यथा हरम में आयोजित उत्सव ,त्योहारों ,क्रीड़ाओं, मनोरंजन के विभिन्न साधनों, साहित्य ,संस्कृति, सजावट तथा स्थापत्य कला में शाही परिवार की महिलाओं की रुचियों का अवलोकन भी प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही इस शोध पत्र के द्वारा इन महिलाओं के आवास ,सुरक्षा ,आर्थिक स्तिथि तथा उस परिवेश व प्रतिबंधों को समझने का प्रयास भी किया गया है ।

सन्दर्भ:

लाइफ एंड लेटर्स अंडर द मुग़ल,
हिंदुस्तान के निवासियों का जीवन व् परिस्थितिया, के एस लाल
सम आस्पेक्ट ऑफ़ सोशल लाइफ दूरिंग थे मुग़ल ऐज, चोपड़ा